डॉ. गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक

पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		–7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध-कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	–98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	–102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	–109

गोपाल राय : एक दृष्टि **डॉ. राजीव कुमार झा** –116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय**–121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ॰ गोपाल राय **डॉ. कल्याण कुमार झा** –133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय **डॉ. संत साह** –137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ॰ गोपाल राय **डॉ. साक्षी शालिनी** –140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ॰ गोपाल राय **डॉ. राकेश रंजन** –144
डॉ॰ गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति **डॉ. सुशांत कुमार** –153
डॉ॰ गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन **डॉ. संध्या पाण्डेय** –157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय **डॉ. चित्तरंजन कुमार** –163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन **सोनल** –170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय **अखिलेश कुमार** –176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ॰ गोपाल राय **डॉ. माधव कुमार** –180
कथा आलोचक डॉ॰ गोपाल राय **डॉ. पल्लवी** –185
डॉ॰ गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश **समीक्षा सुरभि** –188
कथालोचक डॉ॰ गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ **डॉ. प्रीति कुमारी** –200
डॉ॰ गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता **डॉ. इंदिरा कुमारी** –205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय **पल्लवी कुमारी** –211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना **डॉ. अंशु कुमारी** –216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ॰ गोपाल राय **विकास कुमार** –220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय **उषाकिरण खान** –225
इतिहासकार-कोशकार डॉ॰ गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय	**भगवानदास मोरवाल**	–227
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय	**डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**	–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार (समीक्षा से साभार)	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार :	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय	**डॉ. सुनीता गुप्ता**	–258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय	**डॉ. पूनम सिन्हा** **डॉ. माधव कुमार**	–263
अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ डॉ० गोपाल राय	**विनीता कुमारी**	–268
प्रतिवेदन		–271

हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय

–डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

डॉ० गोपाल राय का व्यक्तित्व श्रमसाध्य और समयसाध्य एक विलक्षण प्रतिभा का बहुकोणीय व्यक्तित्व है। वे प्रतिभावान विद्यार्थी, स्मरणीय अध्यापक, अन्वेषी आलोचक, प्रखर-निष्पक्ष पत्रकार तथा सफल मनुष्य के रूप में समादर के योग्य हैं। उनका प्रत्येक कर्म अनिवार्य और असाधारण है। उनकी अदम्य जिजीविषा, अगाध अध्ययन, सहज-सम्प्रेष्य भाषा और रचना के बारीक-बिन्दुओं को विश्लेषित करने की तेज दृष्टि को लक्ष्य कर कहना पड़ता है कि उनका शब्द-कर्म एक संकल्पित व्यक्ति की वैसी साधना है, जो सफलता की सीमा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आगामी पीढ़ी को प्रेरित करने तक अग्रसर है। कृष्णा सोबती के शब्दों में कहूँ तो–"साहित्य अपनी बेजोड़ सम्पन्ता और समग्र विस्तार में सनातन पौरुषेय को स्तंभित कर देनेवाली सफलताओं का पर्याय नहीं है। साहित्य संस्थानों का वह संस्थान है जहाँ विफलताएँ किसी का सिर नीचा नहीं करतीं और सफलताएँ गर्व से मस्तक ऊँचा नहीं करतीं। साहित्य की यही वैचारिक और व्यावहारिक मर्यादा है। इसे जीता कोई और है, लिखता कोई और है और पढ़ता कोई और है। बावजूद इसके इन तीनों की कड़ी एक-दूसरे से गुँथी रहती है।"

गोपाल राय ने हिन्दी आलोचना को विस्तार और वैश्विकता प्रदान की है। उनके लिए आलोचना सदैव एक पुनर्रचना रही है। उन्होंने हिन्दी आलोचना के अछूते नहीं मगर विच्छिन्न अवश्य, जैसे क्षेत्रों में समर्पण के साथ व्यवस्थित, अध्ययनपरक एवं गवेषणामूलक ऐतिहासिक कार्य किया है। अपने आलोचना-कर्म की प्रेरणा और प्रभाव के प्रसंग में पूनम सिन्हा को दिये गये साक्षात्कार में उन्होंने कहा है–"1957 से 1965 तक मैं कॉलेज में था। उस समय आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, प्रोफेसर नलिन विलोचन शर्मा, प्रो०

जगन्नाथ राय शर्मा थे। वे पढ़ाते भी थे, शोध भी कराते थे। छात्रों को पढ़ाने के लिए वे गहन अध्ययन भी करते थे। वही परंपरा मुझे मिली। बहुत मेहनत से छात्रों को पढ़ाया। उसे लिखकर सामग्री के रूप में संगृहीत किया। उपन्यास और भाषा वगैरह पर मेरी जो किताबें हैं, वे उसी अध्यापन का प्रतिफल हैं। अध्यापन के क्रम में जो पढ़ा वह लेखन के काम में आया।'' (समीक्षा, अक्टूबर-दिसम्बर-2012, पृ.-13)

इसी साक्षात्कार में गोपाल राय हिन्दी आलोचना के विकासक्रम को रेखांकित करते हुए कहते हैं-''1967 के बाद आलोचना तीन रूपों में होती है-पहला शोध प्रबंध के रूप में, दूसरा आलोचना पुस्तक के रूप में, और तीसरा पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों एवं पुस्तक-समीक्षाओं के रूप में। 1970 के बाद सिर्फ दो ही आलोचकों डॉ० रामविलास शर्मा एवं डॉ० नामवर सिंह ने प्रमुखता पाई। कथा वगैरह में बहुत सारे नाम आए। ऐसे आलोचक थे जिनकी चर्चा होनी चाहिए थी, लेकिन नहीं हुई। बहुत सारे आलोचकों को तो आलोचकों ने ही दबा दिया। साहित्य-अकादमी ने अपना पुरस्कार किसी आलोचक को नहीं दिया। ......शोध का स्तर गिरा। स्वतंत्र पुस्तकों में आलोचना आई, लेकिन विशेष मूल्यांकन नहीं हुआ। समीक्षाओं और लेखों में व्यक्तिगत राग-द्वेष प्रकट होने लगे, खेमेबाजी होती रही, आज भी है। समालोचना की आज की भाषा, अस्पष्ट, अव्यवस्थित एक जुमलेबाजी के रूप में है। रचनाकारों ने भी आलोचकों को घसीटने का काम किया है।'' (उपरिवत्, पृ.-13) प्रकारान्तर से डॉ० गोपाल राय हिन्दी आलोचना की संकटापन्न स्थिति से वाकिफ थे। इसलिए उन्होंने अपने शोध कार्य, आलेखों, इतिहास-लेखन तथा पत्रकारिता कार्यों के माध्यम से उस बड़ी चुनौती को स्वीकार किया और भारतेन्दु के नाट्यालोचन, द्विवेदी जी के शास्त्रीय और पत्रकारिता कर्म, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इतिहास-लेखन और आलोचना कर्म, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा के भाषाशास्त्रीय तथा नलिनविलोचन शर्मा की आलोचना दृष्टि की प्रेरणा पाकर हिन्दी कथालोचना के विच्छिन्न तारों को व्यवस्थित, तार्किक, प्रामाणिक और रचनात्मक बनाने का उल्लेखनीय कार्य किया। हिन्दी कथालोचना का इतना क्रमिक, सम्यक्, वैविध्यपूर्ण और प्रविधिमूलक कार्य करने वाला दूसरा व्यक्तित्व हिन्दी संसार में ओझल नहीं तो विरल अवश्य है।

डॉ० गोपाल राय का पहला लेख 1953 ई. में 'अवंतिका' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। तदन्तर 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'परिषद् पत्रिका',

'सम्मेलन पत्रिका', 'हिन्दी अनुशीलन', 'हिन्दुस्तानी' जैसी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उनके दर्जनों आलेख प्रकाशित हुए। 1964 में उन्होंने 'हिन्दी कथा साहित्य और उसके विकास पर पाठकों की रुचि का प्रभाव' जैसे गंभीर विषय पर डी.लिट्. के लिए शोधकार्य किया। यह कथालोचना की दिशा में प्रामाणिक और व्यवस्थित कार्य है। शोध कार्य के क्रम में उपलब्ध की गयी श्रम साध्य सामग्री का उपयोग करते हुए उन्होंने 'हिन्दी उपन्यास कोश' के दो खंडों (प्रथम खंड-1870 से 1917 तक, 1968 एवं द्वितीय खण्ड-1918 से 1936 तक, 1969) के रूप में प्रकाशित कर शोधकर्त्ताओं एवं साहित्येतिहास लेखकों के लिए अनिवार्य उपयोगी कार्य किया। उनकी कथालोचना से हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है। 'उपन्यास का शिल्प' (1973), 'अज्ञेय और उनके उपन्यास' (1975), 'रंगभूमि-पुनर्मूल्यांकन (1983), 'मैला आँचल' (1992), 'महाभोज' (2002), 'दिव्या' (2001), 'हिन्दी उपन्यास का इतिहास' (2002), 'उपन्यास की संरचना' (2006), तीन खंडों में 'हिन्दी कहानी का इतिहास' आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त 1967 से 'समीक्षा' नाम से सर्वथा अद्वितीय प्रकृति की पत्रिका का प्रकाशन भी उनके दीर्घ और अन्वेषणपरक कथालोचना को एक नया वितान देता है।

उन्होंने कथालोचना का सघन कार्य कई स्तरों पर किया है। उनके आलोचना-कर्म की दिशा सैद्धांतिक और व्यावहारिक है। आधुनिकता के अग्रदूत भारतेन्दु ने नाट्य और नाट्यालोचन के क्षेत्र में, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा और साहित्य के क्षेत्र में तथा आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कविता अनुशीलन के क्षेत्र में जो प्रतिमान गढ़े और नवोदितों के लिए आलोचना के जो औजार विकसित किये उसी प्रकार डॉ० गोपाल राय ने कथालोचन के क्षेत्र में नये निकष का निर्माण किया और व्यावहारिक आलोचना को नयी दिशा और गति प्रदान की। इसके पूर्व किये गये हिन्दी कथालोचन का समस्त प्रयत्न महत्त्वपूर्ण तो था मगर वैश्विक प्रतिस्पर्धा में 'बैकफुट' पर प्रतीत होता था। कथालोचना के क्षेत्र में भी उनकी कहानी-विषयक आलोचना जो उनके इतिहास-लेखन के माध्यम से प्रकट हुई मुझे अधिक प्रभावित करती है। ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि मैं कहानी का अध्ययन अपेक्षाकृत अधिक करता रहा हूँ।

आधुनिक हिन्दी कहानी-कला की शिल्प-विधि के मौलिक तथा वास्तविक विकास की कालावधि 1910-1936 है, इस पर अधिसंख्य इतिहास लेखकों, अन्वेषकों और समीक्षकों के मत में समानता है। यह समय

दो विश्वयुद्धों के बीच की कालावधि भी है। इसके पूर्व में जितनी भी कहानियों की रचना हुई, उनसे हिन्दी कथा के आरंभ का सूत्रपात निश्चित रूप से हुआ। कहानी के विधान में कथानक, चरित्र, शैली और समस्या को एक निश्चित दिशा भी मिली अर्थात् कहानी की सीमा, क्षेत्र और ध्येय को एक रूप मिला। कथानक, घटना, चरित्र, काल्पनिक और स्वच्छन्द शैली, वर्णनात्मक, तिलस्मी, ऐय्यारी समस्या अथवा वर्ण्य-वस्तु में धर्म-आचरण का आदेश, रोमांस और तिलस्मी व्यापार आदि तात्त्विक विशेषताएँ कहानी की सीमा क्षेत्र और रूप को निर्धारित करने लगीं। लेकिन इन समस्त प्रयोगों से निर्मित कोई भी कहानी शिल्प-विधि की दृष्टि से हिन्दी की मौलिक कहानी नहीं सिद्ध हुई। ऐसी स्थिति में हिन्दी कहानी की समालोचना की शुरुआत कैसे संभव हो पाती।

वस्तुः हिन्दी में आधुनिक कहानी की परंपरा का सूत्रपात और विकास जयशंकर प्रसाद की कहानी 'ग्राम' (1910) और प्रेमचंद की 'सौत' तथा 'पंच परमेश्वर' (1916) से होता है। इन दो कथा-ऋषियों ने हिन्दी कहानी के क्षेत्र में राजपथों का निर्माण किया।

वर्ष 1927 में पं. विनोद शंकर व्यास ने चुनिंदा कहानियों का संग्रह कर 'मधुकरी' नाम से प्रकाशित कराया। इसमें कहानी की विकास परंपरा के रेखांकन और विवेचन के क्रम में उन्होंने समान अंतर्कथ्य और परिरूप को लक्ष्य कर सर्वप्रथम हिन्दी कहानी की पहचान और विकास-यात्रा को स्कूल की अवधारणा के माध्यम से रेखांकित करते हुए विश्लेषित किया। उनका कथन है-"अध्ययनशील पाठकों के लिए मैं वर्तमान हिन्दी-कहानी लेखकों को तीन भिन्न-भिन्न स्कूलों में विभाजित करूँ तो अनुचित न होगा। कारण यहाँ पर किसी लेखक की किसी अन्य लेखक से तुलना करना मेरा उद्देश्य नहीं है। प्रत्येक लेखक अपने स्थान पर महान है।" आगे कहते हैं-"इन तीन स्कूलों को हम इस तरह बाँट सकते हैं-प्रसाद, प्रेमचंद और उग्र।" (मधुकरी, भाग-2, पृ.-20) इसी पद्धति पर आगे चलकर 'जैनेन्द्र' और 'यशपाल' स्कूल की अवधारणा भी विकसित हुई। हालाँकि शिवदान सिंह चौहान और विजयमोहन सिंह जैसे कुछ समीक्षकों ने व्यावहारिक समीक्षा पर बल देते हुए 'स्कूल संबंधी वर्गीकरण पर एतराज जताते हुए कहा है-"हिन्दी कहानी के कुछ इतिहासकारों ने प्रसाद, प्रेमचंद, जैनेन्द्र और यशपाल के नाम पर उनके निश्चित स्कूलों (निकायों) की कल्पना की है और हिन्दी के कहानीकारों का वर्गीकरण इनमें से किसी एक स्कूल के अंतर्गत रखकर

[illegible] हिंदी कहानी [illegible] 201-202 [illegible]

[illegible] कहानी अनुभव और शिल्प [illegible] कहानी, शिल्प, इतिहास, आलोचना [illegible] कहानी की बात, [illegible] कहानी और कहानी की समीक्षा, [illegible] और [illegible] हिंदी कहानी और [illegible] हिंदी कहानी : एक अंतरंग परिचय, हिंदी गद्य का विकास, हिंदी [illegible] हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी कहानी आंदोलन : [illegible]

और सीमाएँ, हिन्दी साहित्य का उद्देश्य, हिन्दी कहानियों की शिल्प-विधि का विकास, हिन्दी कहानी : उद्‌भव और विकास, हिन्दी कहानी की रचना-प्रक्रिया, हिन्दी कहानियों का विवेचनात्मक इतिहास, हिन्दी कहानी : पहचान और परख, हिन्दी कहानी और कहानी समीक्षा का मूल्यांकन, हिन्दी गद्य मीमांसा, हिन्दी का गद्य साहित्य, हिन्दी कहानी : दशा-दिशा, संभावना, हिन्दी कहानी में जीवन-मूल्य, कहानी-नयी कहानी, नयी कहानी की भूमिका जैसी आलोचना, समीक्षा और शोध-पुस्तकों के माध्यम से हिन्दी कहानी की क्रमिक विकास यात्रा और उसकी शिल्पगत विशेषताओं पर प्रकाश अवश्य पड़ता है। लेकिन इसे सम्यक और समग्र इसलिए नहीं कह सकते क्योंकि एक तो इन ग्रन्थों में अभिव्यक्त कहानी-आलोचना प्रमुख कहानी-धाराओं और प्रतिनिधि कहानीकारों को अधिक आच्छादित करती है। इस दृष्टि से डॉ० गोपाल राय की कहानी संबंधी आलोचना अधिक क्रमिक, सुसंगत, व्यवस्थित और विश्लेषण पूर्ण है।

डॉ० गोपाल राय पहले लेखक हैं जिन्होंने वैश्विक इतिहास-लेखन की सभी पद्धतियों से अवगत होकर, हिन्दी कहानी का इतिहास लिखा। यह इतिहास तीन प्रमुख खण्डों में प्रकाशित हैं। 2008 में प्रकाशित प्रथम भाग में 100 लेखकों की 3000, 2011 में प्रकाशित दूसरे भाग में 300 कहानी-लेखकों की 5000 तथा 2014 में प्रकाशित तीसरे भाग में लगभग 2000 कहानियों का विस्तार से अध्ययनपरक एवं विश्लेषणपरक इतिहास-सम्मत अनुशीलन किया गया है। इसमें हिन्दी के अलावा, उर्दू, भोजपुरी, मैथिली और राजस्थानी कहानी-साहित्य को भी स्थान दिया गया है। इमसें अहिन्दी भाषी और प्रवासी भारतीयों द्वारा लिखित कहानी साहित्य का भी सुनियोजित विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रथम भाग में 1900-1950 के बीच की कहानी-सम्पदा का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। दूसरे भाग में 1951-1975 तक की रचित कहानियों का प्रवृत्तिमूलक एक शिल्पगत अनुशीलन वैज्ञानिक प्रणाली से किया गया है। तीसरे भाग में 1976 से 2000 तक रचित कहानियों का व्यवस्थित इतिहास लेखन डॉ० गोपाल राय ने किया है।

डॉ० गोपाल राय के कहानी के इतिहास लेखन पर विचार करने से प्रतीत होता है कि यह एक अनूठा प्रयास है। इस अवधि में जो कहानी-साहित्य रचा गया, उसकी सीमाएँ तो हैं, पर उसका आलेखन और मूल्यांकन कम जरूरी नहीं है। इस पुस्तक की खास विशेषता यह भी है कि कहानी की सक्रियताओं के साथ लेखक ने उन विभिन्न सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक

एवं सांस्कृतिक स्थितियों का भी विश्लेषण किया है, जिनका प्रभाव अनिवार्य रूप से रचनाशीलता पर पड़ता है; तथ्यों की प्रामाणिकता और प्रवृत्तियों के विश्लेषण की क्षमता इसे विशेष रूप से उल्लेखनीय कृति बनाती है। (हिन्दी कहानी का इतिहास भाग 1 से)

डॉ० गोपाल राय ने इतिहास लेखन जैसे श्रम और समय साध्य कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने किसी वाद प्रतिवाद की परिधि में बिना बँधे, निर्भीकता और निष्पक्षता के साथ इतिहास लेखन का सफल और सार्थक कार्य किया है। उन्होंने इतिहास और शोध अनुशासनों का पालन करते हुए भी मौलिक स्थापनाएँ की हैं। कहानियों का परिचय, विश्लेषण, रचनातंत्र, प्रवृत्तिगत वैशिष्ट्य तथा उसकी कतिपय सीमाओं को भी विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। इस क्रम में यथासंभव प्रतिनिधि रचनाकारों की रचना-प्रक्रिया और रचना की समय-सम्बद्धता को भी समीक्षित करने का उन्होंने प्रयास किया है। भावुकता से परहेज करते हुए उन्होंने रचना को मूल्यांकित किया है। अगाध अध्ययन, सूक्ष्म-सतेज दृष्टि तथा सधी भाषा-क्षमता के साथ उनके द्वारा किया गया इतिहास-लेखन उनपर गंभीर विवेचन और अनुसंधान की अपेक्षा रखता है।

एसोसिएट प्रोफेसर
विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर

□